इरिटेब्ल् बावल् सिन्ड्रोम् (आई.बी.एस्.)

IRRITABLE BOWEL SYNDROME (I.B.S.)

उत्यक्त आंत्रिक लक्षण-समूह

प्रश्न : आई.बी.एस्. क्या है?

उत्तर : आई.बी.एस्. एक पेट की बीमारी है। कई लक्षणों के मिलने से जो लक्षण समूह होता है, उसे अंग्रेजी में सिन्ड्रोम् कहते हैं। आई.बी.एस्. में पेट में दर्द के साथ पेट का फूलना, पतली टट्टी होना एवं कब्जियत होती है। इस बीमारी में बड़ी आँत ठीक से काम नहीं करती है ।

प्रश्न : आई.बी.एस्. क्यों होता है?

उत्तर : अभी तक आई.बी.एस्. के सही कारण के बारे में पता नहीं है। इस बीमारी में बडी आँत उत्यक्त रहती है। इस वजह से पेट में दर्द होता है और बार बार पाखाना होता है। संवेदनशील स्नायु के वजह से भी पेट में दर्द हो सकता है। आई.बी.एस्. के वजह से ज्यादा तकलीफ होने पर भी इस बीमारी में बड़ी आँत में कोई आंगिक बीमारी नहीं होती है या शरीर का विशेष नुकसान नहीं होता है। इस बीमारी में काफी लम्बी अवधि के बावजूद कैन्सर नहीं होता ।

प्रश्न : आई.बी.एस्. के क्या लक्षण हैं?

उत्तर : मुख्य लक्षण हैं :

★ पेट में दर्द या मरोड़ (प्राय: यह पाखाना के समय होता है या पाखना के बाद कम जाता है)।

★ लम्बी अवधि के लिये दस्त, पेट साफ नहीं होना अथवा इन दोनों लक्षणों का मिश्रण - कभी दस्त तो कभी कब्जियत।

अन्य लक्षण हैं :

★ पाखाना में आँव का जाना

★ पेट का फूलना

★ पाखाना के समय ठीक से निष्कासन ना होने की अनुभूति

प्रश्न : आई.बी.एस्. का डाइग्नोसिस् कैसे होता है?

उत्तर : काफी लम्बे समय से जब शिकायत होती है एवं साधारण स्वास्थ में विशेष अवनति नहीं होती है तो डॉक्टर आई.बी.एस्. के बारे सोचते हैं । रोग के निर्णय के लिये कभी कभी रोम प्रणाली (Rome Criteria) का व्यवहार भी किया जाता है । “रोम” प्रणाली कोई परीक्षा नहीं हैं - लक्षण और अवाधि के बल कर डाइग्नोसिस् किया जाता है । साधारणत: हर रोगी में कुछ साधारण रक्त और पाखाना का परीक्षण किया जाता है। लेकिन कुछ रोगियों में जिनमें कैन्सर या कोलाइटिस् का संदेह होता है, उनमें कोलोनोस्कोपी किया जाता है। इस परीक्षा में कुछ दवा देकर बड़ी आँत को पहले सम्पूर्ण रूप से साफ किया जाता है, और उसके वाद एक पतली नली को बड़ी आँत में डाल कर अच्छी तरह से निरीक्षण किया जाता है। कोलोनोस्कोपी के दौरान जरूरत पड़ने पर कुछ मिनटों में संदिग्ध जगह से बायप्सी (मांस की परीक्षा) भी की जा सकती है ।

प्रश्न : आई.बी.एस्. का इलाज कैसे किया जाता है?

उत्तर : आई.बी.एस्. का इलाज सब रोगियों के लिये समान नहीं होता है - लक्षण के अनुसार इलाज होता है। पाखाना साफ नहीं होने पर ईसबगोल जैसी दवा दी जाती है, और पाखाना पतला हो तो पाखाना को बांधने के लिये दूसरे तरह की दवा देनी पड़ती है। इसके अलावा ज्यादातर रोगियों में मानसिक अशान्ति होने की वजह से, इन रोगियों को इसके लिये भी कुछ दवाएं देनी पड़ती है । कई रोगियों को उनकी तकलीफ के बारे में समझा देने पर, उनका कष्ट काफी कम हो जाता है। इसके अलावा नित्य व्यायाम और योग क्रिया करने से भी रोगियों को लाभ होता है। आई.बी.एस्. रोगियों को खाने पर विशेष ध्यान देना चाहिये; जिन चीजों का सेवन करने से उनकी तकलीफ बढ़ती हो, उनका सेवन नहीं करना चाहिये।

विश्व पाक-स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष में आई.बी.एस्. रोगियों के लिये कलिंग गैस्ट्रोएण्टरॉलॉजी प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित